साधन थोड़ा, दिल चौड़ा

अंकिता ठाकुर छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के पुस्सोर तहसील में स्थित एक निजी अँग्रेज़ी माध्यम स्कूल की बारहवीं कक्षा की छात्रा है। वह अपने परिवार की दूसरी पीढ़ी है जो स्कूल जा रही है। अंकिता की माँ के माता-पिता दिहाड़ी मज़दूर थे। लेकिन अंकिता की माँ ने स्पेशल एजुकेशन में बीएड कर लिया है और अब वे स्पेशल एजुकेशन की ब्लॉक रिसोर्स पर्सन हैं। अंकिता के पिता भी स्नातक हैं और एक निजी कम्पनी में दिहाड़ी मज़दूर हैं।

अंकिता की रुचि जीव-विज्ञान में है। हालाँकि पहले उसके परिवार वाले सोचते थे कि वह शिक्षक बनने का विकल्प चुनेगी। लेकिन एक महिला डॉक्टर से मिलने के बाद अंकिता ने एमबीबीएस व बीडीएस के पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने हेतु चिकित्सीय प्रवेश परीक्षा (राष्ट्रीय योग्यता-सह-प्रवेश परीक्षा - NEET) देने का फ़ैसला लिया। अंकिता एक होशियार छात्रा है। उसने दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में अस्सी प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। स्कूल में यह उसका महत्त्वपूर्ण आख़िरी साल है, जिसमें उसके ऊपर मेडिकल की प्रवेश परीक्षा में सफल होने का दबाव भी है। हमने उसकी परीक्षा की तैयारी तथा महामारी के दौरान और उससे पहले की दिनचर्या में आए बदलावों के बारे में कुछ सवाल-जवाब किए।

अंकिता इस साल कड़ी मेहनत के साथ पढ़ाई की एक सख़्त समय-सारणी का पालन कर रही थी। वह सुबह 7:30 बजे से दोपहर के 1:30 बजे तक स्कूल में पढ़ती। इसके बाद घर पर तीन घण्टे खुद से पढ़ती। उसके बाद दो घण्टे भौतिकी और रसायन-विज्ञान की ट्यूशन ले रही थी।

अप्रैल के पहले हफ़्ते में, स्कूल ने सभी बच्चों को व्हाट्सएप के माध्यम से सूचित किया कि वे प्रतिदिन दो घण्टे सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक ऑनलाइन कक्षाएँ लेना शुरू करेंगे। परिवार में सिर्फ़ एक स्मार्टफ़ोन था जो उसकी माँ अपने साथ लेकर काम पर जाती थी। अब घर से काम करने के दौरान भी उन्हें इसकी ज़रूरत पड़ती थी। इसलिए, उन्होंने एक दूसरा स्मार्टफ़ोन ख़रीद लिया। अंकिता का एक छोटा भाई भी है जो आठवीं कक्षा में पढ़ता है और उसे भी ऑनलाइन कक्षाओं के लिए स्मार्टफ़ोन की ज़रूरत पड़ती है। जैसे-तैसे तीन लोग मिलकर दो स्मार्टफ़ोन से काम चला रहे थे।

अंकिता ने नीट परीक्षा की तैयारी के लिए रोज़ाना दो घण्टे की ऑनलाइन कोचिंग कक्षाएँ शुरू की हैं। उसके लिए भी उसे स्मार्टफ़ोन की ज़रूरत पड़ती है। वह कहती है, ऑनलाइन पढ़ाने में कोचिंग संस्था के शिक्षक ज़्यादा पेशेवर ढंग से कार्य करते हैं। उसके स्कूल के शिक्षकों की ऑनलाइन पढ़ाने की प्रक्रिया काफ़ी बोझिल रही थी और उन्हें खुद बहुत सीखने की ज़रूरत पड़ी। शुरूआत में ऑनलाइन कक्षाएँ बहुत ही अनियमित रहीं, लेकिन शिक्षकों ने खूब मेहनत की ताकि बच्चों को आ रही दिक़्क़त दूर कर सकें। अब शिक्षक ऑनलाइन माध्यम में कक्षा लेने में ज़्यादा सहज महसूस करते हैं और कक्षाएँ भी नियमित चल रही हैं।

वह कहती है कि उसे अपने दोस्तों और शिक्षकों की बहुत याद आती है। ख़ासकर भौतिकी के अध्यापक की, जो बहुत अच्छा पढ़ाते हैं और प्रयोगशाला में प्रयोगों के माध्यम से सारी अवधारणाएँ समझाते थे। अब कोई प्रयोग नहीं होते। अपनी शंकाओं का समाधान कर पाना भी कक्षा में ज़्यादा आसान था। हालाँकि अब कई शिक्षक रविवार को 'शंका सत्र' रखते हैं जिसमें बच्चे उस हफ़्ते में पढ़ाए किसी भी विषय पर अपनी शंकाओं पर स्पष्टीकरण पूछ सकते हैं।

अंकिता हमें बताती है कि स्कूल में वह अपनी प्रगति के बारे में ज़्यादा अच्छे से वाक़िफ़ थी क्योंकि बार-बार टेस्ट होते थे। अब उसके लिए यह जानना बेहद मुश्किल है, हालाँकि शिक्षक पूरी कोशिश करते हैं, उसे टेस्ट पेपर भेजते हैं और उसके जवाबों की ऑनलाइन समीक्षा भी करते हैं। पर इससे उसे इस बात की पूरी तस्वीर नहीं मिलती कि वह कैसा कर रही है।

क्या उसकी कक्षा के सारे बच्चे ऑनलाइन कक्षा से जुड़ने में सक्षम हैं? पूछने पर वह कहती है, 'नहीं, एक लड़की जिसके पास स्मार्टफ़ोन नहीं है और वह खरीद भी नहीं पाई, उसने विद्यालय छोड़ दिया। वह एक भी कक्षा अटेंड नहीं कर पाई। लेकिन शिक्षकों ने पहल की और लॉकडाउन हटने पर उन्होंने उस लड़की से कहा कि वह हर दिन स्कूल आए और प्रत्यक्ष रूप में उनसे पढ़े। अंकिता को इस बच्ची से हमदर्दी है। उसने तय किया है कि वह अपनी माँ से कहेगी कि अपने दो स्मार्टफ़ोन में से एक स्मार्टफ़ोन उसकी दोस्त को दे दे। हमने पूछा कि फिर तुम क्या करोगी? वह कहती है कि घर में एक पुराना टैब (टैबलेट) रखा है, उसे ठीक करवाकर खुद इस्तेमाल करेगी।

जैसा अंकिता ने लर्निंग कर्व को बताया।

अनुवाद : सात्विका ओहरी